सन्दर्भ ग्रंथ – रोहिणीकहा (गाथा 1 से 100 तक)
सम्पा. डॉ. प्रेम सुमन जैन , साहित्य संस्थान, उदयपुर, 1986
अनुवाद एवं ग्रन्थ समीक्षा

इकाई पॉच – 20 अंक

गउडवहो (बाक्पतिराज) सं – एन. जी. सुरू
गाथा संख्या 62–64, 68, 70–73, 75–71, 850–60, 862–67, 871–885, 887, 892–897, 900, 902–3, 905–908 कुल 50 गाथाएं
सन्दर्भ पुस्तिका : वाकपतिराज की लोकानुभूति, गाथाएं 1–50
संकलन – डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर–1983
व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

सहायक पुस्तकें :

1 प्रवचनसार सम्पा. डा. एन. एन. उपाध्ये (भूमिका)

2 प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ जगदीश चन्द्र

3 भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान – डॉ हीरानन्द जैन

4 भगवती आराधना (शिवार्य) भाग 2 सं – पं. के. सी. शास्त्री जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर, 1978

5– महावीर और उनकी आचार्य–परम्परा, भाग 2 डॉ. नेमिचन्द

6– अभिनव प्राकृत व्याकरण – डॉ नेमिचन्द शास्त्री

7– शौरसेनी प्राकृत भाषा और व्याकरण –डॉ. प्रेम सुमन जैन भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 2001

जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य एम. ए. (उत्तरार्द्ध)

सत्र–2004–2005 / परीक्षा–2004

प्रश्नपत्र पंचम : पाण्डुलिपि–सम्पादन, छन्द एवं शिलालेख

100 अंक

इकाई एक 20 अंक

Helpstudentpoint.com

पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त –

1– पाण्डुलिपि विज्ञान का सवरूप एवं महत्व
2– पाण्डुलिपि की रचना–प्रक्रिया एवं चिन्ह
3– प्राप्ति –विवरण, बाह्य एवं अंतरंग परिचय
4– लिपी के प्रकार (ब्राह्मी, देवनगरी आदि)

इकाई दो – 20 अंक

पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त –

5– वर्ण–विकार एवं शब्द एवं अर्थ की समस्या
6– पाठालोचन की प्रमुख प्रणालियां एवं पाठ–निर्माण
7– काल–निर्धारण के प्रमुख आधार
8– प्रमुख ग्रन्थ – भण्डारों का परिचय एवं महत्व

इकाई तीन – 20 अंक

प्राकृत–अपभ्रंश छन्द एवं लाक्षणिक साहित्य

(क) प्राकृत एवं अपभ्रंष छन्द–10 अंक
निम्नलिखित प्राकृत छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण–
गाहा, पथ्या, विपुला उग्गाहा, गाहू, सिंहणी, गाहिणी एवं स्कन्धक एवं द्विपदि, कडवक, घत्ता, पज्झाडिका, हेला, चौपाइया

(ख) प्राकृत का लाक्षणिक साहित्य–10 अंक
छन्द, अलंकार एवं कोष के प्रमुख ग्रन्थों का परिचय

इकाई चार – 20 अंक

प्राकृत शिलालेख

1– अशोक के 1–8 शिलालेख (गिरनार पाठ) एवं खारबेल का शिलालेख का सट्टिपण अनुवाद

2– प्राकृत के प्रमुख शिलालेखों पर सामान्य प्रष्न

इकाई पॉच – 20 अंक

प्राकृत काव्य साहित्य परिचय एवं व्याख्या सेतुबन्ध (प्रवरसेन) प्रथम सर्ग (1–40 गाथाएं), सम्पादक – डॉ. राजाराम जैन

सहायक पुस्तकें :

1 अशोक – डॉ भण्डारकर

2 जैन साहित्य का वृहत इतिहास भाग 6, डॉ. गुलांबचन्द चौधरी

3 छंदानुशासन–हेमचन्द

4 प्राकृत पेंगलम (सम्बन्धित अंश)

5 पाठालोचन की भूमिका – डॉ कत्रो

6 पाण्डुलिपि सम्पादनकला – सं – डा. रामगोपाल शर्मा दिनेश

7 पाण्डुलिपि विज्ञान–डॉ सत्येन्द्र –राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

8 खारबेल शिलालेख – डॉ शशिकान्त जैन

9 सेतुबन्ध (प्रथमसर्ग) सम्पा. – डॉ हरिशंकर पाण्डेय

10 प्राकृतभाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (247–296)

11. जैन साहित्य का वृहत इतिहास भाग 5, पं. अम्बालाल शाह

Helpstudentpoint.com

प्रश्नपत्र षष्ठ : प्राकृत–संस्कृत व्याकरण एवं भाषा विज्ञान

100 अंक

इकाई एक – 20 अंक

प्राकृत व्याकरण :

हेम शब्दानुशासन के तृतीय पाद के सूत्र 1–42 सूत्र एवं 58–182 सूत्रों की सोदाहरण हिन्दी व्याख्या। इसके लिए –

(अ) प्राकृत व्याकरण के शब्दरूप, कारक एवं सर्वनाम से सम्बन्धित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्रों में से चार सूत्रों को देकर दो की व्याख्या पूछना

(ब) प्राकृतव्याकरण के क्रिया एवं कृदंत से संबंधित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्रों में से चार सूत्रों देकर दो की व्याख्या पूछना

इकाई दो – 20 अंक

सोदाहरण नियम एवं ग्रन्थ परिचय

(क) प्राकृत व्याकरण के अव्यय, सन्धि, समास, विशेषण एवं वाक्य प्रयोगों से सम्बन्धित सोदाहरण नियम लिखना – (10 अंक)

(ख) प्राकृत–व्याकरण के प्रमुख ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों का सामान्य परिचय – 10 अंक

इकाई तीन – 20 अंक

संस्कृत व्याकरण – प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी (कपिलदेव द्विवेदी) (पाठ 1–20)

संस्कृत के संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, कृदन्त एवं संधि के प्रमुख नियमों की जानकारी अपेक्षित है। इसके लिए सरल हिन्दी वाक्यों का संस्कृत अनुवाद, सामान्य शब्द रूप एवं क्रिया रूप पूछे जा सकते हैं ।

इकाई चार – 20 अंक

भाषा–विज्ञान एवं पालि–प्राकृत

– भारतीय आर्यभाषाओं के विकास का संक्षिप्त इतिहास (वैदिक भाषा, पालि, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश एवं आधुनिक भाषाओं के साथ प्राकृत का सम्बन्ध)

इकाई पॉच – 20 अंक

ध्वनि परिवर्तन के प्रमुख नियम एवं प्राकृत
(लोप, आगम, विपर्यय, ह्रस्वमात्रा नियम, समीकरण, विषमीकरण, स्वरभक्ति, संधि आदि के सोदाहरण नियम) इसके लिए प्राकृत भाषा एवं साहित्य के आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
(अध्याय प्रथम, पृष्ठ 1–23 एवं अध्याय पंचम, पृष्ठ 113–153) का सम्बन्धित अंश का अध्ययन अपेक्षित।

सहायक पुस्तकें :

1– हेमशब्दानुशासन–(प्यारचन्द महाराज) की हिन्दी व्याख्या, ब्यावर

2– हेम–प्राकृत व्याकरण–शिक्षक–डॉ उदयचन्द जैन, जयपुर, 1983

3– हेमचन्द का शब्दानुशासन–एक अध्ययन – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

4– प्राकृतमार्गोपदेशिका– पं. बेचरदास दोशी

Helpstudentpoint.com

5– प्राकृत स्वयं शिक्षक (खण्ड–1) – डॉ प्रेम सुमन जैन (तृतीय आवृत्ति)

6– प्राकृत भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण एवं उसमें प्राक् संस्कृत तत्व–डॉ. के. आर .चन्द्रा अहमदाबाद

7– भाषा विज्ञान की रूपरेखा – डॉ भोलानाथ तिवारी

8– भाषा विज्ञान की रूपरेखा – डॉ देवेन्द्र कुमार शास्त्री

9– प्राकृत व्याकरण – डॉ उदयचन्द्र जैन

वैकल्पिक प्रश्नपत्र

अ– जैन आगम एवं सिद्धान्त ग्रूप

प्रश्नपत्र सप्तम : जैन आगम, ध्यान एवं योग

100 अंक

इकाई एक – 20 अंक

अर्धमागधी आगम

1– सूत्राकश्तांग (प्रथम समय अध्ययन 83 गाथाएं)–10 अंक

2– उपासगदसांगसूत्र –प्रथम आनन्दश्रावक अध्ययन–10 अंक

इकाई दो – 20 अंक

ज्ञान, ध्यान एवं योग

1– कार्तिकेयानुप्रेक्षा (स्वामीकार्तिकेय) गाथा 253 से 301 तक (ज्ञानस्वरूप एवं नय वर्णन) सम्पा. डॉ. ए. एन. उपाध्ये

2– जैन ध्यान एवं योग –सिद्धान्त एवं प्रक्रिया

इकाई तीन – 20 अंक

पंचास्तिकाय (कुंदकुंद) द्वितीय अधिकार (गाथा 105 से 153 नव पदार्थ एवं पुद्गल अस्तिकाय विवेचन)

इकाई चार – 20 अंक

पठित ग्रन्थों का दार्षनिक, भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन

Helpstudentpoint.com

इकाई पॉच – 20 अंक

आगम के व्याख्या साहित्य का परिचय एवं महत्व
(निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, टीका आदि एवं शौरसेनी आगम की प्रमुख टीकाएं)

सहायक पुस्तकें :

1– सूत्राकश्तांगसूत्र – सं. मुनि मधुकर (हिन्दी व्याख्या सहित)

2– जैन साहित्य का वृहत् इतिहास, भाग 1, 2 एवं 3

3– जैन आगम साहित्य–मनन और मीमांसा – देवेन्द्र मुनि शास्त्री

4– भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ हीरालाल जैन

5– तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, भाग 1–2 – डॉ. नेमिचन्द

6– प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ जगदीशचन्द्र जैन

7– आगम युग में जैन दर्शन – पं. दलसुखभाई मालवणिया

8– जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज – डॉ जगदीशचन्द्र जैन

9– शौरसेनी प्राकृत व्याकरण – डॉ उदयचन्द जैन 1989

10– प्राकृत गद्य–पद्य बन्ध, भाग 1–2 – प्राकृत शोध संस्थान, वैशाली

11– जैन योग का आलोचनात्मक अध्ययन – डॉ. अर्हतदास डिगे

प्रश्नपत्र अष्टम : जैनविद्या, सिद्धान्त एवं दर्शन

100 अंक

इकाई एक – 20 अंक

सम्मइसुत्तं (सिद्धसेन, तीसरा अनेकान्त खण्ड 1–70 गाथाएं) एवं समीक्षा

इकाई दो – 20 अंक

सिद्धान्त प्रतिपादन –

1– समणसुत्तं चयनिका (सोगानी) गाथा 1–60 (10 अंक)

2– दशवैकालिकसूत्र (1 से 4 अध्ययन)–10 अंक

इकाई तीन – 20 अंक

जैन दर्शन की समीक्षा –
सत्तास्वरूप, सप्ततत्व, कर्मसिद्धान्त, स्यादवाद एवं अनेकान्तवाद का विवेचन।

इकाई चार – 20 अंक

जैन आचार मीमांसा
गृहस्थाचार, श्रमणाचार, गुणस्थान, रत्नत्रय एवं मोक्ष–स्वरूप

इकाई पॉच – 20 अंक

जैन साहित्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन एवं श्रमण परम्परा

(1) समाज, दर्शन, कला एवं शिक्षा आदि की दृष्टि से जैन साहित्य का मूल्यांकन–10 अंक

Helpstudentpoint.com

(2) तीर्थंकर ऋषभदेव, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर का जीवन दर्शन तथा समन्तभद्र, अकलंक, प्रभाचन्द्र, हेमचन्द्र, यशोभद्र दार्शनिक आचार्य के अवदान–10 अंक

सहायक पुस्तकें :

1– सन्मतिसूत्र (हिन्दी अनुवाद)–सम्पा. डॉ देवेन्द्र कुमार शास्त्री नीमच, 1978

2– समणसुत्तं, प्रकाषक सर्व सेवा संघ, वाराणसी

3– दशवैकालिक – एक समीक्षात्मक अध्ययन

4– तत्वार्थसूत्र, सम्पादक – पं. सुखलाल सिंघवी

5– जैन दर्शन, पं. महेन्द्र कुमार जैन

6– जैन धर्म–दर्शन – डा. मोहनलाल मेहता

7– जैन दर्शन – मनन और मीमांसा – मुनि नथमल

8– स्टडीज इन जैन फिलासफी– डॉ. नथमल टाटिया

9– जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज– डॉ. जगदीश चन्द जैन

10– कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन– डॉ. प्रेम सुमन जैन

11– ए क्अीकल स्टडीज आफ पउ्चरियं – डॉ के. आर. चन्द्रा

12– स्टॅडीज इन भगवतीसूत्र– डॉ. जे. सी. सिकदर

13– जैन–आचार सिद्धान्त और स्वरूप– देवेन्द्र मुनि

14– परमात्मा प्रकाश एवं योगसार, सम्पा. डॉ. उपाध्ये

15– जैनधर्म – पं कैलाशचन्द्र शास्त्री, मुजफ्फरनगर

16– जैनधर्म के प्रभावक आचार्य– साध्वी संघमित्रा

17– तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा

18– जैन दर्शन में आत्मविचार – डॉ लालचन्द जैन

HelpStudentPoint.com

(2) तीर्थंकर ऋषभदेव, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर का जीवन दर्शन तथा समन्तभद्र, अकलंक, प्रभाचन्द्र, हेमचन्द्र, यशोभद्र दार्शनिक आचार्य के अवदान–10 अंक

सहायक पुस्तकें :

1– सन्मतिसूत्र (हिन्दी अनुवाद)–सम्पा. डॉ देवेन्द्र कुमार शास्त्री नीमच, 1978

2– समणसुत्तं, प्रकाषक सर्व सेवा संघ, वाराणसी

3– दशवैकालिक – एक समीक्षात्मक अध्ययन

4– तत्वार्थसूत्र, सम्पादक – पं. सुखलाल सिंघवी

5– जैन दर्शन, पं. महेन्द्र कुमार जैन

6– जैन धर्म–दर्शन – डा. मोहनलाल मेहता

7– जैन दर्शन – मनन और मीमांसा – मुनि नथमल

8– स्टडीज इन जैन फिलासफी– डॉ. नथमल टाटिया

9– जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज– डॉ. जगदीश चन्द जैन

10– कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन– डॉ. प्रेम सुमन जैन

11– ए क्अीकल स्टडीज आफ पउ्चरियं – डॉ के. आर. चन्द्रा

12– स्टॅडीज इन भगवतीसूत्र– डॉ. जे. सी. सिकदर

13– जैन–आचार सिद्धान्त और स्वरूप– देवेन्द्र मुनि

14– परमात्मा प्रकाश एवं योगसार, सम्पा. डॉ. उपाध्ये

15– जैनधर्म – पं कैलाशचन्द्र शास्त्री, मुजफ्फरनगर

16– जैनधर्म के प्रभावक आचार्य– साध्वी संघमित्रा

17– तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा

18– जैन दर्शन में आत्मविचार – डॉ लालचन्द जैन

HelpStudentPoint.com